समस्या के चयन को पभावित करने वाले कारक

शोध समस्या के चयन को प्रभावित करने वाले कारको का निम्नाकित वर्णन है :–

मौलिकता (Originality)

मूलरूप से यह माना जाता है कि प्रत्येक शोध नयी व अपने आप में अनोखी होती है। इसलिए यह शोधकर्ता का दायित्व होता है कि शोध समस्या का चयन करने के लिए अभिनव ज्ञान का उपयोग किया जाए जिसमें ज्ञान में और बृद्धि हो सके।

रूचि (Interest)

शोध का कार्य अधिकतर समय लेने वाला और परिश्रम पूर्ण होता है और यदि आप कोई ऐसे विषय का चुनाव कर लेते है जिसमें आपकी अधिक रूचि नही है तो आवश्यक उत्साह को बनाए रखना और इसका पूर्ण करने में पर्याप्त समय तथा ऊर्जा लगाना अत्यंत कठिन हो सकता है।

आकार (Size)

शोध के आकार का अर्थ शोध में प्रयुक्त होने वाले चरो की संख्या का आकार, प्रतिदर्श का आकार से है। शोध का आकार बहुत छोटा या अत्यधिक बड़ा नही होना चाहिए। शोध के विषय का चयन इस प्रकार से सीमित होना चाहिए कि वह प्रबंधन योग्य विशिष्ट तथा स्पष्ट हो।

अवधारणोय का मापन (Measurement of concepts)

शोध समस्या का विषय मे चुनाव में यह भी ध्यान रखने योग्य है कि अवधाराणाये का मापन मात्रात्मक होगा या गुणात्मक मात्रात्मक अवधारणाये में वजन, लम्बाई व गुणात्मक में स्वाद, अभिवृद्धि व्यवहार आदि सम्मिलित है।

वि□ाशज्ञता का स्तर (Level of Experties)

शोधकर्ता को सुनिश्चित होना चाहिए कि चयनित शोध कार्य के लिए उसके पास पर्याप्त स्तर की विशेषता है इसलिए शोध समस्या या विषय के चुनाव से पूर्व विषय विशेष का गहन साहित्य अवलोकन करना आवश्यक होता है।

प्रासंगिकता व व्यवहारिक उपयोगिता (Applied and practical implication)

सदैव एक ऐसे विषय का चयन करना चाहिए जिसकी शैक्षणिक कार्य क्षेत्र या समाज सेवा रूप में प्रासगिक रूप में प्रांसगिकता हो। शोध परक अध्ययन के लिए उस समस्या का चुनाव करना चाहिए। जिसके निष्कर्षो से व्यक्ति एवं समाज को लाभ हो।

ऑकडो की उपलब्धता (Availability of Data)

ऐसी समस्या का चुनाव करना चाहिए, जिसमें सम्बन्धित तथ्य ऑकड़ो द्वारा समयावधि के अन्दर प्राप्त किये जा सके। ऑकडो के संग्रह के लिए विश्वसनीय और वैध उपकरण भी उपलब्ध होने चाहिए।

वित्तीय संसाधनों की सीमा (Limitation of Finance)

शोध कार्य में धन का व्यय होता है। शोध समस्या का चुनाव करते समय वित्तीय संसाधनो एवं उपलब्ध धन के विषय में भी ध्यान अवश्य रखना चाहिए।

समस्या चयन की प्रक्रिया

(Process of Problem Selection)

समस्या चयन की प्रक्रिया के अन्तर्गत निम्नलिखित सोपान सम्मिलित होते है :–

सोपान 1 : रूचि वि□ोश के किसी एक बड़े क्षेत्र या विशय की पहचान करना

(Identify a Broad field or subject area of interest)

शोधकर्ता को अपने शोध कार्य के लिए शोध समस्या का चयन करने की खोज में सबसे पहला कार्य है :– अपने शोध के विषय या एक बडे क्षेत्र की पहचान करने के लिए अपने आप को पूर्ण स्प से तैयार करना। सामान्यतः यह कार्य निम्न कारको पर आधारित होता है :–

– उसकी अपनी रूचि

– उसके पूर्व अनुभव या अध्ययन

– एक विद्यार्थी या कर्मी के रूप में अपने कार्य क्षेत्र में महसुस की गयी कठिनाई या समस्या।

– भावी योजनाओं की उद्देश्य पूर्ति जैसे– कोई नौकरी प्राप्त करने या शैक्षणिक या व्यवसायिक क्षेत्र में आगे बढ़ना आदि।

सोपान 2 चयन किए गए क्षेत्र में भाोध समस्या का पता लगाने हेतु स्त्रोतो की खोज करना (Exploring the possible sources to look for research problems in the chosen area):– अपने रूचि के विस्तृत क्षेत्र और विषय से सम्बन्धित शोध समस्यॉ या प्रकरणो के बारे सभी संभव स्त्रोतो या तरीको से कुछ संकेतो या सुझाव प्राप्त करने के प्रयास करने पड़ते है। इस सम्बन्ध में शोधकर्ताओ को जो स्त्रोत उपलब्ध होते है वे कुछ निम्न प्रकार के हो सकते है :–

1) पूर्व अनुभव या अध्ययन (Past experiences or study)

2) उपलब्ध सिद्धान्तो का परीक्षण (Testing of the available theories)

3) शोध समस्या के बारे में सुझाव (The suggestions for needed research)

4) वर्तमान में उपलब्ध शोध कार्य (The research work available at present)

5) तकनीकी प्रगति और समाजिक विकास (Technological process & social development)

6) वरिष्ठ शोधकर्ताओ तथा शोध मार्गदशको से विचार विर्मश करना (Consultation with the seniors and supervisors)

सोपान –3 एक भाोध समस्या की पहचान या चयन (Identifying or selecting a Research problem) :-

द्वितीय सोपान पर किए गए अनुसन्धानकर्ता/शोधकर्ता को अपने शोध अध्ययन के लिए एक विशिष्ट समस्या को ढूॅढने या प्राप्त करने में काफी सहायता कर सकता है। परन्तु एक शोध समस्या को प्राप्त कर लेने का अर्थ यह नही है कि शोधकर्ता द्वारा किए जाने वाले शोध अध्ययन के लिए यही समस्या या प्रकरण निश्चित हो गया है शोध समस्या में मूल्यांकन के लिए सामान्यतः जो कसौटी अपनाई जाती है उस पर खरा उतरने या असफल होने पर ही इस समस्या की स्वीकृति या अस्वीकृति के समान मौके होते है। जैसा कि सुखिया एवं अन्य (1966) ने कहा है ''सामान्य रूप में यह कसौटी निम्न प्रश्नो के स्वीकारात्मक उत्तरो से युक्त होती है :–

1) **क्या यह रूचिकर है ?** अगर शोध अरूचिकर या उबाऊ है तो यह आशा कम है कि वह इस कार्य के साथ न्याय करेगा।

2) **क्या यह नवीन है ?** यदि इस समस्या या विषय पर पहले ही किसी शोधकर्ता द्वारा कार्य कर लिया गया है तो इसी पर पुनः कार्य करना समय बर्बाद करने के समान होगा।

3) **क्या यह महत्वपूर्ण है ?** यदि इसकी उपयोगिता नही है ना तो यह ज्ञान बृद्धि में सहायक है ना ही उन्नत बनाने में तो यह कार्य व्यर्थ है।

4) **क्या इसका क्रियान्वयन सम्भव है ?** इसका निर्धारण निम्न बातो द्वारा होता है :–

यह समस्या जिस प्रकार का अध्ययन चाहती है क्या मुझमे उसके अनुसार योजना बनाने और उस पर कार्य करने की आवश्यक क्षमता है ?

क्या ऑकडे आसानी से उपलब्ध हो सकेगे।

क्या इस सम्बन्ध में दिशा निर्देश आसानी से सम्भव है ?

चयनित समस्या का मूल्यांकन

Evaluation of Selected Problem)

शोध हेतु समस्या को अन्तिम रूप देने से पहले उसकी उपयुक्ता (Suitability) पर गम्भीरता पूर्वक विचार किया जाता है। इसे समस्या का मूल्यांकन (evaluation of Problem) कहते है इसके अन्तर्गत यह विचार किया जाता है कि समस्या शोध हेतु उचित है या नही। इसके अन्तर्गत निम्न बिन्दुओ पर समस्या के सम्बन्ध में चर्चा करना अति आवश्यक है :–

1) भाोध द्वारा समाधान :– क्या समस्या ऐसी है जिसे शोध के द्वारा समाधान किया जा सकता है ? दूसरे शब्दो में क्या समस्या ऐसी है जिसके बारे में संगत ऑकडे (relevant data) संग्रहित किये जा सकते है और उनका उचित उत्तर दिया जा सकता है ?

2) समस्या की सार्थकता :– क्या समस्या में इतने चर (Variable) सम्मिलित है जिनका शोध किया जा सकता है ? क्या समस्या के समाधान से वर्तमान शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक तथा समाजिक सिद्धान्त में महत्वपूर्ण परिवर्तन आ सकता है ?

3) समस्या में नवीनता – क्या समस्या नयी है ? अगर समस्या ऐसी है जिसका शोध पहले हो चुका है तो उस पर शोध करने की पुनः आवश्यकता है या नही ?

4)**समस्या का सैद्धान्तिक मान** :– क्या समस्या का कोई सैद्धाान्तिक मान है ? क्या समस्या ऐसी है जिसके क्षेत्र में उत्पन्न अज्ञानता की खाई भरी जा सकती है ?

क्या समाधान से किसी सिद्धान्त के विकास में मदद मिलेगी ?

5) समस्या तथा ऑकड़ा संकलन – क्या समस्या ऐसी है जिसके बारे में महत्वपूर्ण ऑकडे तैयार किये जा सकतें है ? क्या इसके लिए अच्छे ऑकडे संग्रहण उपकरण प्राप्त है ? आदि।

यदि उपर्युक्त प्रश्नो का उत्तर हॉ में मिलता है तो समझना चाहिए कि शोध समस्या उपर्युक्त (Apporopriate) तथा वैज्ञानिक है यदि उनका उत्तर नही में मिलता है तो ऐसी समस्या एक अच्छी शोध समस्या नही मानी जायेगी।